

साफ-सौफाइ कौरौ मच्छरुं कौइ बौचौ



Bangani

साफ-सौफाइ कौरौ मच्छरुं कौइ बौचौ

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

परकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

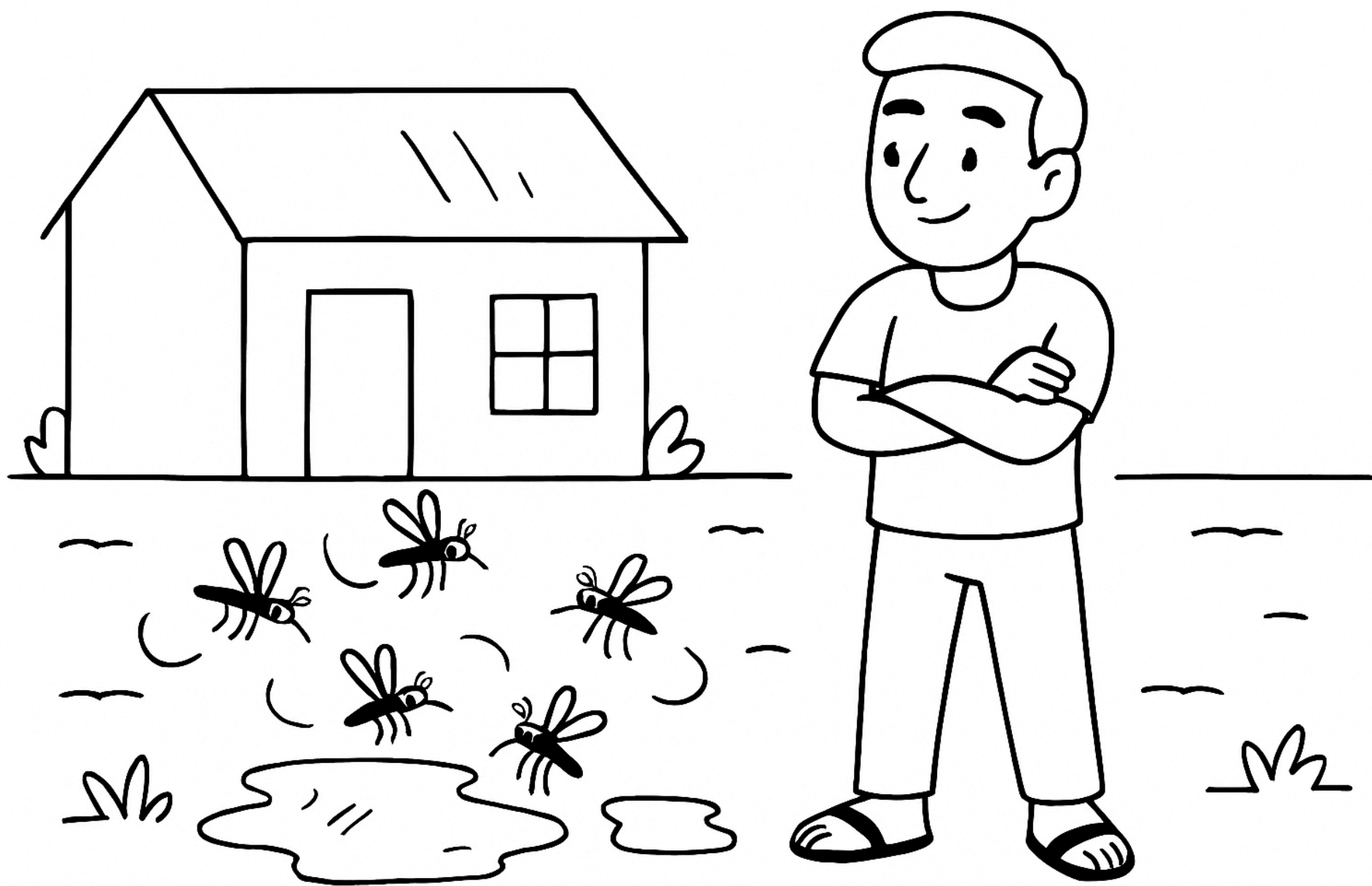
दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बड़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकी जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद॥



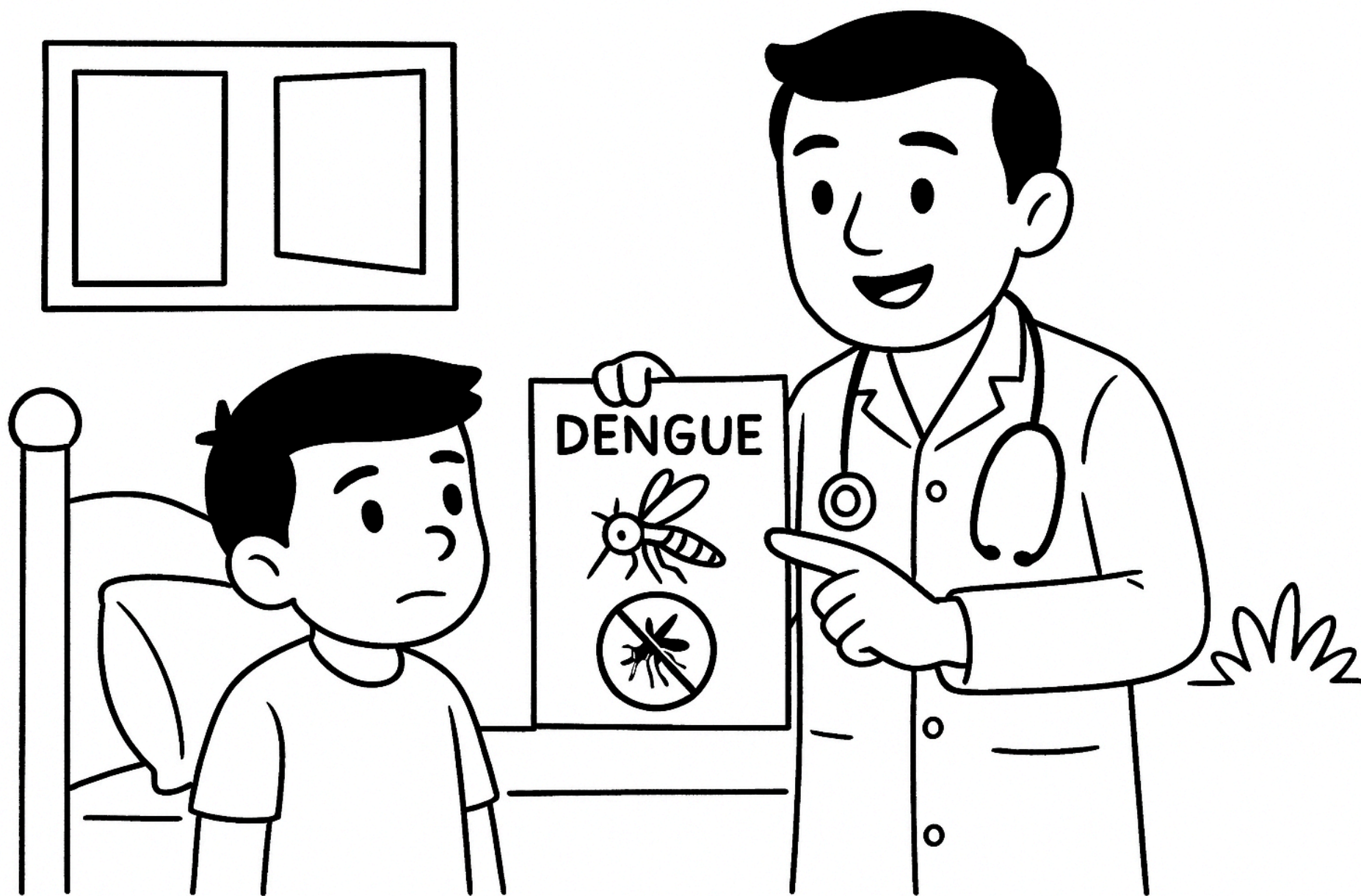
एक गाउँ दि औरिया आपड़े
पौरिवार रै साथै रौयै थौ, बौरसात
बासियै गौरैकै बाटि बौरी पाणी
औयै थौ रुकौन्दौ



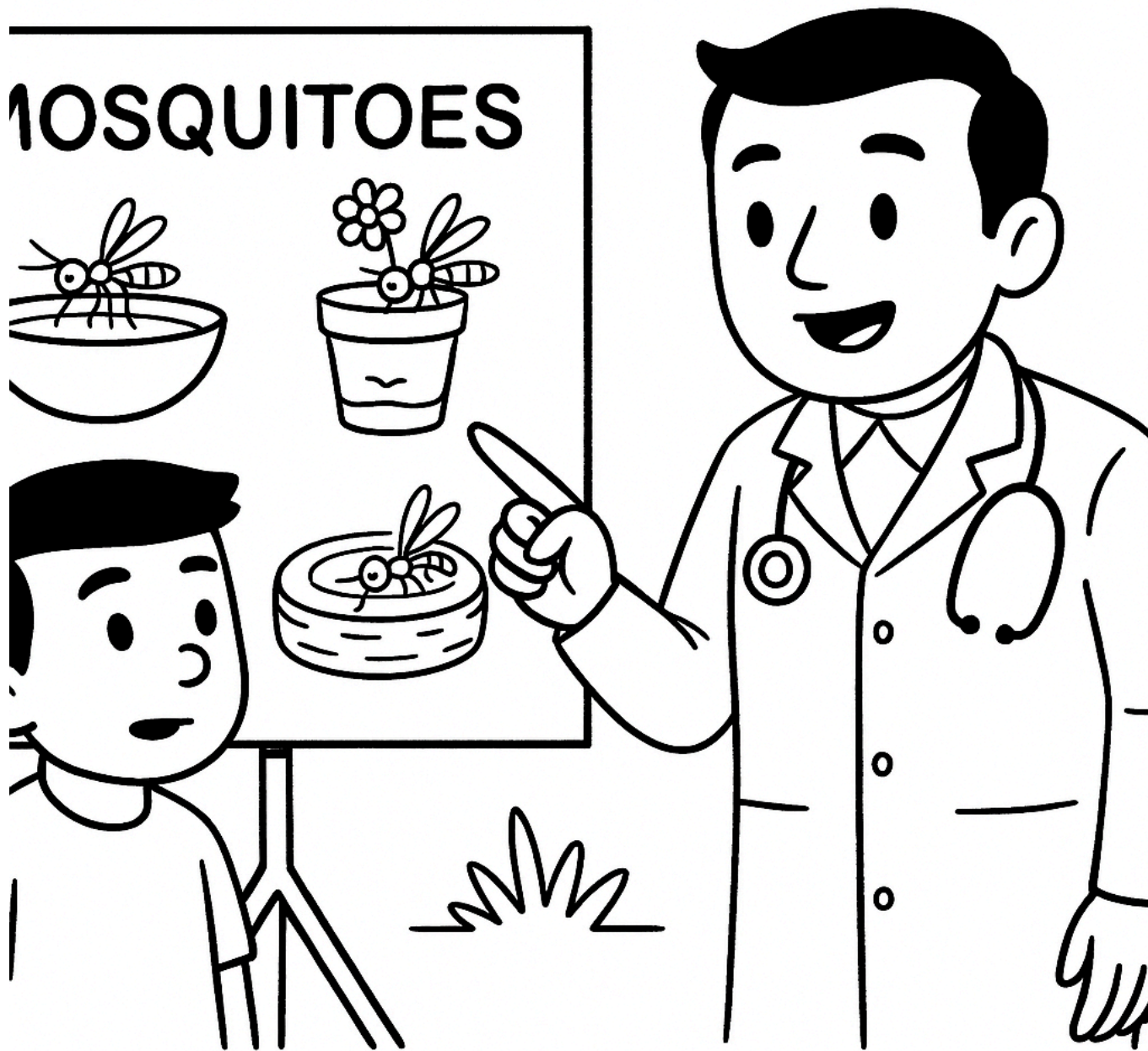
औरियाइ सुँचौ कि- "गौरैकै बाटि
रौ पाणी तै आफूइ शुके लौ।" पर
कुछ ई दुसु बासियै तेसरै गौरे दि
बौरी मच्छर बौरुवै।



तेसरी बेटी पूजाइ बुखार आयै ।
एज़ि बौज़ै कौइ सै बौरी कमज़ोर
उई । औरियाइ सै औस्पताल
दि गिणी ।



डौक्टरेइ बौलौ- "कि ईंदि डेंगू औई
सौकै। डेंगू मच्छरुं कौइ फैळै।"
"तुमारै गौरैकै बाटि केथिकै पाणी तै
ना रौ रुकी?



डौक्टरेइ सै सौमज़ायै कि मच्छर
साफ पाणी माइं बी अंडे दैण!"

"ओखेर, गौमला, जेसदि बी
रुकौन्दौ पाणी औयै तेस पोरु
गाड़ियौ।"



तैबै औरियाइ गौरकै डेइयौ साफ
सौफाइ शुरु की, जेत्कै बी पाणी
रुकौन्दौ थौ। सेउ पोरु फिरकाओ।
औज़ि आपकै बाटि बौड़िया कौइ
साफ सौफाइ की।



औज़ि तिणी पाणी रै ड्रम बौडिया
कौइ डौकी देणै। औज़ि पुराणै टाइर
बाऽरै फिरकायै। तेसरौ पुरौ पौरिबार
साफ सौफाइ कौरदै लागै।



हर औप्ते दि सै आपडै आस-पास दि
साफ सौफाइ कौरैण थै एज़ि बौज़ै
कौइ तिउँरी एज़ि आदत बौणी गोइ
थी। एज़ि बौज़ै कौइ मच्छर बी कम
उई गोयै थै। औज़ि पूजा बी ठीक
उई गोइ थी।



औरियाइ आपडै पोड़ोसी बी
सौमज़ायै "मच्छरुं ज़ांगणेरी दुवाइ
कौइ बौड़िया आपडै गौरै रै आस
पास दि साफ सुथरौ थौ।



गाउँ दि ऐबै 'साफ-सौफाइ रौ औप्पौ'
मौनांदै लागै। औजि हर एक जौणै
आपडै गौरैकै बाटि साफ सुथरौ
थौन्दै लागै।



गाउँ रै लोग ऐबै आफुइ आपडै गाउँ
री देखरेख कौरदै लागै। औज़ि
बोलदै लागै। मच्छरुं बौगाओ –
बीमारीउँ बौगाओ।

रुकौन्दौ पाणिएइ साफ कौरौ,
औज़ि डेगू-मलेरिया कौइ बौचौ!



इं कांऽणी कौइ आम्कै एशी शिक
मिलै कि मच्छरुं कौइ बौचणै रौ
सारिउं कौइ बौड़िया तौरिकौ
एज़ौ, सौफाइ, रुकौन्दौ पाणिएइ
साफ कौरौ, औज़ि डेंगू-मलेरिया
कौइ बौचौ!

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में वयस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे कि बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

.....धन्यवाद.....

